- जयमंगल अट्ठगाथा-

बाहुं सहस्समभिनिम्मित्सायुधन्तं,
गिरिमेखलं उदित-घोर-ससेन-मारं ।
दानादि धम्मविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते *जय मंगलानि ॥१ ॥
मारातिरेक मभियुज्झित सब्बरत्तिं
घोरम्पनालवक मक्खमथद्ध-यक्खं
खन्ती सुदन्त विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥२ ॥
नालागिरिं गजवरं अतिमत्तभूतं,
दावग्गि चक्कमसनीव सुदारुणन्तं
मेतम्बुसेक विधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥३ ॥
उक्खित्त खग्गमतिहत्थ सुदारुणन्तं,
धावन्ति योजनपथङ्गु' लिमालवन्तं
इद्धीभिसखंत मनो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥४ ॥
कत्वान कटठमुदरं इव गब्भिनीया,
चिञ्चाय दुट्ठ वचनं जनकाय मज्झे

सन्तेन सोम विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥५ ॥
सच्चं विहाय-मतिसच्चक वादकेतुं
वादाभिरोपितमनं अति अन्धभूतं
पञ्ञापदीप जलितो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥६ ॥
नन्दोपनन्द-भुजगं विवुधं महिद्धिं
पुत्तेन थेर भुजगेन दमापयन्तो
इद्धुपदेस विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥७ ॥
दुग्गाहदिट्ठि भुजगेन सुदट्ठ हत्थं
ब्रह्मं विसुद्धि जुतिमिद्धि बकाभिधानं
ञाणागदेन विधाना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥८ ॥
एतापि बुद्ध जयमंगल अट्ठगाथा
यो वाचको दिनदिने सरते मतन्दि
हित्वाननेक विविधानिचुपद्दवानि,
मोक्खं सुखं अधिगमेय्य नरो सपञ्ञो ॥९ ॥

जयमङ्गल अट्ठगाथा निट्ठितं

जयमंगल अट्ठगाथा-

हजारों भुजाओं वाले, सुदृढ हथियारों को धारण किए, गिरिमेखला नामक हाथी पर चढे हुए, अत्यन्त भयानक, सेना सहित मार को जिन मुनीन्द्र (बुद्ध) ने अपने दान आदि धर्म के बल से जीत लिया, उन सम्यक् सम्बुद्ध के तेज से तेरा *जय हो, मंगल हो ॥१ ॥

मार के अतिरिक्त रात भर युद्ध करने वाले घोर दुर्द्धर्ष और कठोर हृदय वाले 'आलवक' यक्ष को, जिन मुनीन्द्र ने सहनशीलता व संयम बल से जीत लिया उन भगवान बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥२ ॥

दावानल अग्नि-चक्र और विद्युत की तीव्र ज्वाला के समान अत्यन्त दारूण तथा अत्यन्त मदमत्त नालागिरि गजराज को जिन मुनीन्द्र ने मैत्री रूपी जल वर्षा करके जीत लिया, उन भगवान बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥३ ॥

हाथ में तलवार लेकर योजनों तक दौडने वाले अत्यन्त भयानक अंगुलिमाल को जिन मुनीन्द्र ने अपनी ऋद्धि के बल से जीत लिया, उन भगवन बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥४ ॥

पेट से काठ बांध कर सभा के बीच गर्भिणी की तरह व्यवहार करने वाली 'चिञ्चा' के अपशब्दों को जिन मुनीन्द्र ने अपने शान्त व सोम्य बल से जीत लिया, उन भगवान बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥५ ॥

सत्य को छोड कर असत्य के पोषक, अभिमानी, वाद-विवाद-परायण और अहंकार से अत्यन्त अन्धे हुए 'सच्चक' नामक परिव्राजक को जिन मुनीन्द्र ने प्रज्ञा-प्रदीप जला कर जीत लिया, उन भगवान बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥६ ॥

विविध प्रकार की महा ऋद्धियों से सम्पन्न 'नन्दोपनन्द' नामक भुजंग को जिन मुनीन्द्र ने अपने पुत्र (शिष्य) महामोद्गल्यायन स्थविर द्वारा अपनी ऋद्धि शक्ति एवं उपदेश बल से जीत लिया, उन भगवान बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥७ ॥

घोर मिथ्या दृष्टिरूपी सर्प द्वारा डसे गये विशुद्ध ज्योति और ऋद्धि शक्ति से युक्त 'बक' नामक ब्रह्मा को जिन मुनीन्द्र ने ज्ञान रूपी ओषधि देकर जीत लिया, उन भगवान बुद्ध के तेज से तेरी जय हो, मंगल हो ॥८ ॥

जो कोई पाठक बुद्ध की इन जय मंगल अट्ठ गाथाओं को निरालस भाव से प्रतिदिन पाठ करता है, वह बुद्धिमान व्यक्ति नाना प्रकार के उपद्रवों से मुक्त होकर निर्वाण सुख प्राप्त कर लेता है ॥९ ॥

जयमंगल अष्ठगाथा समाप्त ।

---

* नोट :- यह गाथा स्वयं के लिए कहते वक्त 'भवतु ते' के बदले 'भवतु मे' कहा जाता है ।

Mangala Sutta

Ma"ngala Sutta"m
The Discourse on Good Fortune

[Evam-me suta"m,] Eka"m samaya"m Bhagavaa, Saavatthiya"m viharati, Jetavane Anaathapi.n.dikassa, aaraame.

I have heard that at one time the Blessed One was staying in Savatthi at Jeta's Grove, Anathapindika's park.

Atha kho aññataraa devataa, abhikkantaaya rattiyaa abhikkanta-va.n.naa kevala-kappa"m Jetavana"m obhaasetvaa,
yena Bhagavaa ten'upasa"nkami.

Then a certain devata, in the far extreme of the night, her extreme radiance lighting up the entirety of Jeta's Grove, approached the Blessed One.

Upasa"nkamitvaa Bhagavanta"m abhivaadetvaa ekamanta"m a.t.thaasi.

On approaching, having bowed down to the Blessed One, she stood to one side.

Ekam-anta"m .thitaa kho saa devataa Bhagavanta"m gaathaaya ajjhabhaasi.

As she was standing there, she addressed a verse to the Blessed One.

"Bahuu devaa manussaa ca
ma"ngalaani acintayu"m
AAka"nkhamaanaa sotthaana"m
bruuhi ma"ngalam-uttama"m.

"Many devas & humans beings give thought to good fortune,
Desiring well-being. Tell, then, the highest good fortune."

"Asevanaa ca baalaana"m
pa.n.ditaanañca sevanaa
Puujaa ca puujaniiyaana"m
etam-ma"ngalam-uttama"m.

"Not consorting with fools, consorting with the wise,
Paying homage to those who deserve homage:
This is the highest good fortune.

Pa.tiruupa-desa-vaaso ca
pubbe ca kata-puññataa

Atta-sammaa-pa.nidhi ca
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Living in a civilized country, having made merit in the past,
Directing oneself rightly:
This is the highest good fortune.

Baahu-saccañca sippañca
vinayo ca susikkhito
Subhaasitaa ca yaa vaacaa
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Broad knowledge, skill, discipline well-mastered,
Words well-spoken:
This is the highest good fortune.

Maataa-pitu-upa.t.thaana"m
putta-daarassa sa"ngaho
Anaakulaa ca kammantaa
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Support for one's parents, assistance to one's wife & children,
Jobs that are not left unfinished:
This is the highest good fortune.

Daanañca dhamma-cariyaa ca
ñaatakaanañca sa"ngaho
Anavajjaani kammaani
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Generosity, living by the Dhamma, assistance to one's relatives,
Deeds that are blameless:
This is the highest good fortune.

AAratii viratii paapaa
majja-paanaa ca saññamo
Appamaado ca dhammesu
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Avoiding, abstaining from evil; refraining from intoxicants,
Being heedful with regard to qualities of the mind:
This is the highest good fortune.

Gaaravo ca nivaato ca
santu.t.thii ca kataññutaa
Kaalena dhammassavana"m
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Respect, humility, contentment, gratitude,
Hearing the Dhamma on timely occasions:
This is the highest good fortune.

Khantii ca sovacassataa
sama.naanañca dassana"m
Kaalena dhamma-saakacchaa
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Patience, composure, seeing contemplatives,
Discussing the Dhamma on timely occasions:
This is the highest good fortune.

Tapo ca brahma-cariyañca
ariya-saccaana-dassana"m
Nibbaana-sacchi-kiriyaa ca
etam-ma"ngalam-uttama"m.

Austerity, celibacy, seeing the Noble Truths,
Realizing Liberation:
This is the highest good fortune.

Phu.t.thassa loka-dhammehi
citta"m yassa na kampati
Asoka"m viraja"m khema"m
etam-ma"ngalam-uttama"m.

A mind that, when touched by the ways of the world,
Is unshaken, sorrowless, dustless, secure:
This is the highest good fortune.

Etaadisaani katvaana
sabbattham-aparaajitaa
Sabbattha sotthi"m gacchanti
tan-tesa"m ma"ngalam-uttamanti."

Everywhere undefeated when doing these things,
People go everywhere in well-being:
This is their highest good fortune."